एनसीएल एवं ड्युपौं (Du Pont) के बीच अनुसंधान गठबन्धन करार

डॉ. एस.शिवराम, निदेशक राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे एवं डॉ. उमा चौधरी, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय अनुसंधान एवं विकास, ड्युपौं ने दि. 22 अप्रैल, 2005 को डॉ. थॉमस एम. कोनेली जूनियर, प्रमुख विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अधिकारी, ड्युपौं की उपस्थिति में विलमिंग्टन, डेलावेअर, संयुक्त राज्य अमरीका में अनुसंधान करार पर हस्ताक्षर किए । उक्त करार की शर्तों के अधीन बाजार के अनुरूप नई प्रौद्योगिकी के विकास हेतु भारत की अग्रणी अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं में से एक एनसीएल की प्रतिभाओं तथा क्षमताओं का लाभ ड्युपौं को मिलेगा । ड्युपौं के लिए विकसित की जाने वाली अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत एनसीएल सर्वप्रथम टाइटैनियम प्रौद्योगिकी पर कार्य करेगी ।

डॉ. कोनेली ने कहा कि हम एनसीएल के साथ यह करार करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है । हमारी यह पहल विकास के साथ आगे बढ़ने और हमारे अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों का वैश्वीकरण करने के ड्युपौं के प्रयासों के अनुरूप ही है । भारत के शीर्ष पदार्थ वैज्ञानिकों की अनुसंधान क्षमताओं एवं बौद्धिक प्रतिभा का लाभ उठा कर हमारी प्रवर्तन प्रक्रियाओं को आरम्भ करने के ड्युपौं के प्रयासों को इस करार से गति मिलेगी । इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी प्राप्त करके तदनुसार बाजार की आवश्यकताओं को भी हम पूरा कर सकेंगे ।

ड्युपौं एवं एनसीएल के बीच संबंध 1993 से है जब ड्युपौं भारत में पॉलीएस्टर अनुसंधान के विकास हेतु एनसीएल के माध्यम से सीएसआईआर के साथ भागीदारी करने वाली पहली बहुराष्ट्रीय कंपनी बनी थी । 300 से अधिक पूर्णकालीन पीएच. डी. डिग्रीधारी वैज्ञानिक स्टाफ तथा पीएच. डी. डिग्री हेतु शोधकार्य कर रहे लगभग 360 शोधछात्रों के साथ एनसीएल ने पूरे विश्व में रसायन एवं पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त की है ।

ड्युपौं, जो एक विज्ञान कंपनी है, की स्थापना 1802 में हुई थी । यह कंपनी विश्वस्तर पर इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर कृषि क्षेत्र तक के विशाल बाजार हेतु विभिन्न प्रौद्योगिकियों को

-2-

विकसित करने के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्य हेतु सालाना लगभग 1.3 अरब डॉलर का निवेश करती है । पूरे विश्व में ड्युपौं की 75 से अधिक अनुसंधान एवं विकास सुविधाएँ हैं जिनमें से 40 से अधिक अमेरिका में तथा 35 से अधिक 11 अन्य देशों में हैं । भारत सहित समूचे विश्व में ड्युपौं के 4,400 से अधिक वैज्ञानिक और इंजीनियर कार्यरत है । भारत के साथ कंपनी का सहयोग 200 वर्षों से भी अधिक पुराना है जब सन् 1802 में काला पावडर विस्फोटकों हेतु इस कंपनी ने कच्चा माल जहाज द्वारा पहली बार भारत में भेजा था ।

ड्युपौं विश्व में हर जगह लोगों के बेहतर, सुरक्षित एवं स्वस्थ जीवन के लिए विज्ञान के माध्यम से स्थायी समाधान खोजती है । यह कंपनी 70 से अधिक देशों में काम कर रही है और कृषि, आहार, इलेक्ट्रॉनिक, संचार, संरक्षा एवं सुरक्षा, भवन निर्माण, परिवहन एवं परिधान के क्षेत्रों में आधुनिक उत्पादों एवं सेवाओं की विशाल श्रेणी प्रदान करती है ।